छह माह में आध्यात्मिक स्वउन्नति हेतु विशेष कार्यक्रम उदघाटित

इंदौर। दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मानसिंह परमार, सी.एल.गुप्ता, ब्र.कु.ओम प्रकाश भाई जी, ब्र.कु.हेमलता, प्रो.कमल दीक्षित, अमीन वैद्य, ठाकुर सिंह मकवाना, बाधवानी जी तथा ब्र.कु.अनीता।

इन्दौर, ज्ञानशिखर। माउण्ट आबू राजस्थान में संस्था की अप्रैल में हुई वार्षिक बैठक में निर्धारित कार्यक्रम को जोन में आरंभ करने के लिये प्रथमत: 6 मास की अवधि के लिये आध्यात्मिक स्वउन्नति हेतु एक विशेष कार्यक्रम का उद्घाटन क्षेत्रीय निदेशक ब्र.कु.ओमप्रकाश भाईजी, जोनल कोआर्डीनेटर ब्र.कु.हेमलता बहन, देवीअहिल्या विश्वविद्यालय के पत्रकारिता के विभागाध्यक्ष मानसिंह परमार, भाटिया इंटरनेशनल के प्रेसीडेन्ट सी.एल.गुप्ता, प्रो.कमल दीक्षित, उद्योगपति अमीन वैद्य, ठाकुरसिंह मकवाना, बाधवानी जी, ब्र.कु.अनीता बहन आदि द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया।

कार्यक्रम के विषय को स्पष्ट करते हुये भाईजी ने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य मात्र ईश्वरीय विश्व विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक स्वउन्नति मात्र ही नहीं है वरन इसका बहुत बडा सामाजिक सरोकार भी है और समाज के, राष्ट्र के एवं विश्व के प्रति अपने दायित्वों के निर्वाह करने का प्रयास भी है।

कार्यक्रम के अंतर्गत जोन के 400 से अधिक सेवाकेन्द्र एवं गीता पाठशालाओं में अध्ययनरत सभी विद्यार्थी भाई बहनें प्रात: 6 से 7 बजे तक योग द्वारा आध्यात्मिक शक्ति एवं शांति, प्रेम, स्नेह आदि के प्रकम्पनों का संप्रेषण करेंगे जिससे विश्व की न केवल मनुष्यात्माओं को वरन सर्व आत्माओं, प्रकृति एवं तत्वों को भी प्रभावित करेगी। उन्होंने कहा कि संस्था का प्रत्येक विद्यार्थी प्रति माह एक दिन का मौन रखेगा एवं एक दिवस पूर्ण योग का अभ्यास स्वउन्नति हेतु करेंगे। आपने कहा कि जो रूहानी पावर यहां के विद्यार्थी जमा करते हैं, जो खुशी उन्हें यहां से प्राप्त होती है वह अब सभी में बाँटने का समय आ गया है। सभी ने एक मत से इन विचारों के प्रति अपनी आस्था को स्वयं एक दीप प्रज्वलित करते हुए प्रकट किया ब्र.कु.हेमलता बहन द्वारा सभी को आत्म स्मृति का तिलक दिया गया।

जीवन के अंत तक चलने वाला पाठ है सहनशीलता

बिलासपुर। सहनशीलता एक ऐसी शक्ति है जो अंदर ही अंदर काम करती है। हममें से प्रत्येक के पास जीवन की अष्ट शक्तियों का टूल बाक्स है। सहन शक्ति क्या है और इसका उपयोग कैसे किया जा सकता है। जब मैं अंदर से शांत हूँ तो ही सहन शक्ति की गुंजाइस है। जहां प्यार है वहां खुलापन है, जहां खुलापन है वहां सहनशीलता के लिये स्थान है। कहा जाता है कि सहनशील व्यक्ति कमजोर होता है, जबकि सबसे महान व्यक्ति अपनी सहनशीलता के लिये ही जाने जाते हैं। सहन शीलता एक वाटर टेंक के समान है। हर एक का अपना वाटर टेंक हैं और वह उसे अपनी धैर्यता के पानी से भरने के जिम्मेवार है। धैर्यता के इस पानी से जब वाटर टेंक ओवर फ्लो हो जाता है तो सहन शक्ति भी अधिक हो जाती है। ज्यादातर लोग यह सिद्ध करने की कोशिश करते हैं कि वे सही हैं और दूसरे गलत है। एक सहनशील व्यक्ति को कभी भी कुछ साबित करने की आवश्यकता नहीं है। एक पुरानी कहावत है कि सच्चाई हमेशा बाहर आ जाती है। अगर मैं ऐसी समझती हूं तो ये भी स्वीकार करूंगी कि दूसरे भी सही है। अत: मुझे अपनी सोच को दूसरों के प्रति बदलना चाहिये और उनके प्रति ज्यादा स्नेही, दयालू और समझदार होना चाहिये।

उपरोक्त बातें टिकरापारा स्थित ब्रह्माकुमारीज, श्रद्धा, ध्यान एवं योग केन्द्र में ब्र.कु.मंजू दीदी ने सेवाकेन्द्र पर हुए एक कार्यक्रम में बताते हुए आगे कहा कि सहनशक्ति का आधार बनावटी बातों से परे जाना है। हम अपने बुरे अनुभवों के लिये

दूसरों को दोष देते हैं जबकि हमें अपने अंदर झांक कर स्वयं को जानना होता है। मैं क्रोधी हूं, जब मैं यह स्वीकार कर लेती हूँ, तो मै सहनशील हूँ। और तभी से सब बातें बदलने लगती है। मुझे निस्वार्थ दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति ध्यान देना चाहिये तभी मैं सब बातों को सम्भाल सकती हूँ। हम प्राय: कहते है कि मुझे समझने की जरूरत है परंतु मुझे कहना चाहिये कि मुझे दूसरों को समझने की आवश्यकता है। यह कहना बंद करो कि वो बदले बल्कि मुझे स्वयं को बदलने की आवश्यकता है। ऐसी सोच से धैर्य, शांति और परिपक्वता का विकास होता है। आध्यात्मिक सहनशीलता से ही ऐसी बुद्धिमता का विकास होता है। सहनशील व्यक्ति विषम परिस्थितियों को शांतिपूर्ण तरीके से हल कर लेते हैं। जब कोई मेरा अपमान करता है तो सहनशक्ति मुझे स्थिर और शीतल रहने की शक्ति प्रदान करती है। मुझे रक्षात्मक होने की जरूरत नहीं पडती। सहनशील व्यक्ति सभी को अपने साथ लेकर चलते हैं। तालमेल बिठाते हैं और परिस्थितियों का सामना करते हैं। वे संसार मे होने वाली घटनाओं को, अपने ऊपर उठने का एक अवसर मानते हैं। ये सहनशक्ति आंतरिक शांति और अखंडता से आती है।

जशपुर, (छ.ग.)। मुख्यमंत्री रमनसिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सरिता बहन।

रायगढ़ (छ.ग.)। राज्य गृहमंत्री ननकी राम कंवर को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.चित्रा बहन।

रतलाम। श्री श्री रविशंकर से आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सविता बहन तथा साथ में हैं ब्र.कु.संगीता बहन, ब्र.कु.राजेन्द्र पोरवाल।

खरोरा (छ.ग.)। 'राजयोग अनुभूति शिविर' का उद्घाटन करते हुए अग्रवाल समाज के अध्यक्ष फूल चंद अग्रवाल, ब्र.कु.किरण तथा ब्र.कु.प्रियंका।

चक्रधर नगर, पावनधाम। ग्राम सेवा अभियान के अंतर्गत सद्भावना रैली में ग्रुप फोटो में हैं ब्र.कु.भाई-बहनें।

बूंदी, राजस्थान। पृथ्वी दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण करते हुए जिला वन अधिकारी मुकेश सैनी, सरोज न्याती, ब्र.कु.कमला बहन तथा अन्य।